सत्य एँव अर्थ पूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लैमेन इवैंजलिक्ल फैलोशिप, (LEF,Chennai)

सितम्बर-अक्तूबर, 2009

मैंने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है।

भजन संहिता 16 - यह एक अद्‌भुत भजन है। भजनकार परमेश्वर का बालक है। उनके हृदय में उमड़ते गहरे अनुभवों को यह भजन बाहर लाता है।

आठवां वचन - मैंने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है; इसलिए कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है, मैं कभी न डगमगाऊंगा। मैंने अपने कॉलेज के दिनों में, परमेश्वर को हमेशा अपने दाहिने हाथ उपस्थित पाया। आगे चलकर भी यह बात सच थी। उनकी कृपा से, आगे चलकर भी और अपनी पूरी जिन्दगी के दौरान यह बात सच थी। 'निरन्तर अपने सम्मुख' - दोस्तों के बीच में, शत्रुओं कें बीच में, अपने खेल-कूद, खाने और सोने के समय में भी। 'मेरा मन भी रात को मुझे शिक्षा देता है।' जब तुम परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में रखते हो; वह नींद के समय में भी आपको शिक्षा देता है। शरीर की लगाम हृदय के हाथों में है। जो बातें आपका हृदय अहम समझकर संभाले रखता है, उन्हीं से अपका व्यक्तित्व बनता है। आपके हृदय में संजोये रखी आशा ही अपके कार्यो का दिशा-निर्देशन करता है। परमेश्वर ने इब्राहीम से रात के समय बात की और आकाश के तारों को दिखाया। परमेश्वर रात के लम्हों में हमें शिक्षा देना चाहते है जिस से उनके प्रति आपकी इच्छा और गहरी हो जाती है। अपको परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना चाहिए। जब परमेश्वर के विचार और उनका वचन अपनी

पृष्ठ 3 पर..मैंने यहोवा को..

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें

'परमेश्वर की चुनौती'

ETC TV कार्यक्रम

हर शनिवार सुबह 7:00 बजे

निराशा के बीच में आशा!

हे आशा रखने वाले बन्दियों, गढ़ में लौट आओ, मैं आज ही घोषित करता हूँ कि मैं तुम्हें बदले में दो गुणा लौटा दूँगा।' जकर्याह 9:12

इन दिनों हम लोग निराशा और अंधकार के दौर से गुजर रहे हैं। अखबार ऐसे दुखद समाचारों से भरे है जो हमें बहुत वेदना और पीड़ा पहुँचाते है। हाल ही में घटी प्राकृतिक विपदाएं हजारों को अपने साथ मृत्यु की ओर ले गयीं। और जो बचे है उनमे ज़ीने की आस न बची है। उनकी आँखों के सामने ही उनके अपने प्रिय लोग नाश हो गये है।

हाँ, इन दिनों में सचमुच बहुत से देशों में लोगों पर भयंकर उदासी छायी हुई है। फिर भी इन सभी के मध्य, जब आप यीशु को अपना मुक्तिदाता, प्रभु और मित्र मानते हैं, तब एक बंधन मुक्त आशा का कार्य आपके विचारों और क्रियाओं में होता है।

इस प्रकार हम पवित्र बाइबल में एक विचित्र और चौंकाने वाला कथन पाते हैं - 'आशा के बन्दियों।' एक बंदीगृह हमें आशा की प्रेरणा कम ही देता है। परन्तु यहाँ एक भिन्न प्रकार का बंदीगृह है। जहाँ आप आशा से बंधे हैं और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के द्वारा घिरे हुए हैं।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अनुशासन और सुधरने (परिष्कृत होने) का समय आना चाहिये। परन्तु हर समय हमें याद रहे कि महान बातों के लिये तैयार किये जाने का यही समय है। आप कुछ समय नियंत्रण में बंधे हैं ताकि महान आशिषों के उत्तराधिकारी बन सकें।

परमेश्वर के कार्य के लिये महान आशायें और योजनायें ऐसे ही हम पर नहीं बरसतीं। एक स्वार्थी स्वभाव की व्यक्तिगत अभिलाषा और प्रसिद्धि या पैसे की लालसा हमारे स्वाभाविक दिमाग से जन्म लेता है। सो बहुत से लोग अपने जीवन का अधिकांश भाग छाया का पीछा करने में लगा देते हैं। अंत में वे कड़वे, चिड़चिड़े और असंतुष्ट हो जाते हैं। जीवन और जवानी चली जाती है और बुढ़ापे की असमर्थतायें उनकी महत्वपूर्ण उपयोगिता को सीमित कर देती है। परन्तु पाप के लिए सच्चा पश्चाताप और उद्धारकर्त्ता की ओर यथार्थ रूप से मुड़ना नये क्षितिज को खोलता है। इस तरह की बातों की कल्पना कोई व्यक्ति मुश्किल से ही कर सकता है।

जॉन बनियन जिन्होंने अंग्रेजी साहित्य में स्थायी जगह पायी है, वे 'मसीही मुसाफिर' (पिलग्रिम्स प्रोग्रेस) के लेखक थे। उन्हें एक बार गहरा आघात पहुँचा, जब बेडफोर्ड में एक सबसे घृणित चरित्र वाले व्यक्ति ने अचानक उन्हें देखा और उनकी गंदी भाषा के लिए उन्हें डांटा। जॉन बनियन के लिए यह एक बड़े अचंभे की बात थी कि एक ऐसा जन जो दुष्ट समझा जाता था, वह उनसे अच्छा था। जॉन बनियन बहुत गरीब थे, एक ठठेरे का व्यवसाय (बर्त्तनों की मरम्मत) करके मुश्किल से अपना गुजारा करते थे। हालांकि वे अनपढ़ थे पर जब वे परिवर्त्तित हुए, उनका जीवन एक महान कार्य के लिए प्रक्षेपित किया गया।

उस समय की सरकार द्वारा गैर कानूनी करार की गई सभा में प्रचार करने के कारण उन्हें बारह साल बेडफोर्ड जेल में बिताने पड़े, जो उनके हित में भला ही था। उन दिनों ब्रिटिश सरकार इन सभाओं को गुप्त धर्म संघ कहा करती थी। जो पुस्तक उन्होंने जेल में लिखी उसे इतिहास में जगह मिली। बाईबल के बाद, यह पुस्तक सब से अधिक बिकी है। उनकी स्थानीय अंग्रेजी भाषा एक कलाकृति की तरह स्पष्ट और प्रभावशाली थी। उनके जेलर ने भी उन्हें बेझिझक अन्दर -बाहर जाने की छूट दे रखी थी। इसलिए बंदीगृह उनके लिए बंदीगृह जैसा नहीं था। उनके हृदय परिवर्त्तन के बाद उनके जीवन की प्रसिद्धि बहुत जगहों में फैल गयी थी।

परमेश्वर कहते हैं, 'हे आशा रखने वाले बन्दियों, जो तुम्हारे पास पहले था मैं तुम्हें उसके बदले दो गुणा लौटा दूँगा।' एक दिमाग जो पहले से ही भौतिक वस्तुओं की अभिलाषा से भरा है वह एक बीमार दिमाग है। आप आसानी से अपने बैंक के

पृष्ठ 2 पर...निराशा के बीच में...

पृष्ठ 1 से...निराशा के बीच में...

खाता पर 24 घंटे विचार करते रहकर बीमार पड़ सकते हैं। परन्तु परमेश्वर हमारी मदद करें कि हम विश्वास का धन और प्रेम का अक्षय धन बहुत सी पीढ़ियों के लिए जमा कर सकें।

जब हम परमेश्वर पर विश्वास रखते हैं तो वह हमारे खेतों की उपज को और हमारी मेहनत को आशीष देते है। यह बहुत दुखद बात है कि हजारों किसानों कि मेहनत की उपज नष्ट हो गई है। उनके बोने का बीज भी नष्ट हो गया है। काश वे दुगना देने वाले परमेश्वर की तरफ मुडते जो उनको अपने लहू में धो कर शुद्ध करके स्वर्ग में प्रवेश करने की निश्चित आशा उनको देते । 'मेरी आशा तुम हो!' भजनकार पुकार उठते है। अब हमें अपनी आशाओं का भंडार और अपनी स्थिति को परमेश्वर के सामने रखना होगा। हमारे जीवन की आशाएं और अपेक्षाएं क्या है? कई लोगों को इतना पीटा गया कि उनमें आशायें और अपेक्षायें मिट गयीं। उनमें केवल भय और चिन्ताए हैं। लगातार असफलता का भय, हानि और मृत्यु उनके पीछे है।

जब जीवित परमेश्वर पर हमारी आशा रहती है, तब बिल्कुल इसकी संभावना होती है कि विश्वास हमारे हृदयों में बढ़े। हमारी आशा हममें परमेश्वर के ज्ञान को बढ़ाता जाएगा। यह सोचना बिल्कुल आश्चर्यजनक है कि हमारी आशा हमारे महान परमेश्वर जैसी विशाल हो सकती हैं। एक सकारात्मक ढाँचे का मन तब हम पर शासन करना आरम्भ कर देता है। नयी आशाएं हमारी आत्माओं में उमड़ने लगती हैं। इस प्रकार की स्थिति पहले कभी नही हुई थी। हमारे अन्दर दृढ़ निश्चय होना चाहिये कि हम लाखों आत्माओं को प्रभु के पास ला सकेंगें।

हम परिस्थिति पर अधिक ध्यान देते हैं परमेश्वर पर नहीं, जो पलक झपकते ही मेज उलट सकते हैं और जहाँ कोई आशा नही होती, पूरी रीति से परिस्थिति बदल सकते है। राजनीतिक विवरणकार की राय और पत्रकार के समाचार के वजन से ज्यादा उस व्यक्ति का वजन है जिसके पास परमेश्वर का वचन है। परमेश्वर का वचन हमें आशावादी बनाता है। एक पत्रकार एक स्टार्क को रंगता है और विस्मयकारी चित्र बनाता है। 'यहाँ थोड़ी आशा है', वह कहता है, 'इसे सरलता से लें इसलिए के हमारा सबसे भयंकर भय भी हम पर जल्दी आ पड़ेगा।' क्या ही रूखा और आन्नद हिन भविष्यवाणी, प्रेस से निकलती है! पर वह व्यक्ति जो यीशु को प्रभु मानता है अंधकार से भरी वादियों कि गहराई में पुकार सकता है, 'क्योंकी तू ही मेरी आशा है, हे प्रभु यहोवा, बचपन से मेरा आधार तू ही है।' (भजन संहिता 71:5)

मृत्यु में भी यीशु मसीह हमें आशा देते हैं। यहाँ एक परिवर्त्तित व्यक्ति अपने बच्चों को बता सकता है जब मृत्यु की ठंडी बाहें उसकी आवाज को कमजोर बना देती है। 'बच्चों निश्चय प्रभु यीशु की ओर फिरो, अपने पापों से पश्चाताप करो और मुझसे स्वर्ग में मिलो।' इस प्रकार परिवर्त्तित व्यक्ति की मृत्यु में भी आशा एक ऊँची उड़ान लेती है।

एक संध्या के समय, मैं एक पहाड़ी पर प्रार्थना करने गया, जहाँ से यूरोप का एक कम्यूनिस्ट शहर, बड़े आवासीय उपनगर की तरह दिख रहा था। जैसे मैं ने प्रार्थना की और शहर की रोशनी को देखा, अचानक मेरे मन पर गहरा बोझ आया कि वहाँ शहर के अस्पताल में कितने मरते हुए मरीज होंगे जिन्हें यीशु मसीह के बारे नहीं बताया गया होगा। क्योंकि नास्तिक सत्ता इस प्रकार के क्रिया कलाप की अनुमति नही देती है। यह सोच कर मैं अत्याधिक द्रवित हो गया कि यहाँ के मरीज अनन्तता की खतरनाक स्थिति के निकट पहुँचे हैं, उन्हें यीशु मसीह से मिलने वाले उत्कृष्ट आराम और आशा से दूर रखा गया है। नागरिकों के चेहरे क्लांत, थके हुए और कठोर दिखाई देते हैं। उनमें से आशा निकल जाती है। उनके रुखे, मुस्कुराहट हीन चेहरे देखने पर मन को तकलीफ होती हैं। 'बिना आशा के ये बंदी हैं।' एक दुखी व्यक्ति ने मुझ से कहा, 'मुझे इस देश से बाहर, पश्चिम भाग में जाने कि इजाजत शायद तभी मिलेगी जब मेरी माँ का देहांत होगा। उनकी अंत्येष्टि में जाने की भी शायद मुझे मंज़ूरी ना मिले। उनको देखे मुझे कई साल हो गये है। 'कोई आशा नही है!' यह कितना कुचलने वाला भारी वजन है।

बाईबल इब्राहीम के विषय में बताता है कि 'एक वह जिसका निराशा के विरूद्ध आशा में विश्वास था। ' जब उसने परमेश्वर पर विश्वास किया। कितनी बड़ी विजय को उसने देखा! हमारी आशा क्या है? गीत का रचने वाला तीव्र आवाज में कहता है। 'अधिक पवित्रता मुझे विजयी होने के लिए अधिक सामर्थ्य देती है, कष्ट में अधिक सहनशक्ति, पाप के लिए अधिक दुःख, मेरे उद्धारकर्त्ता पर अधिक विश्वास, उनकी दखभाल के लिए अधिक संवेदना, उनकी सेवा में अधिक आनन्द, प्रार्थना में अधिक प्रयोजन, क्या आप का हृदय इस प्रकार की आत्मिक इच्छाओं से भरा हैं? यह कि यीशु मसीह की तरह होऊँगा। 'अधिक और अधिक मसीह की तरह जब तक न मैं उनको आमने सामने न देखूं।' तब ही महान चीजें आपके जीवन से आयेंगी।

आईये कोई न कहे, 'नहीं, यह असंभव है, मैं अपनी उदासी और अप्रसन्नता से बाहर नहीं निकल सकूँगा। नहीं, मैं अपने मनोभाव और घंमड का, अपनी बेलगाम जीभ और जल्दबाजी में आने वाले क्रोध का कैदी हूँ।' प्रभु यीशु मरे ताकि आप बंधन मुक्त हों और वे आपको आशा का बंदी बनायें जो दो गुणा आशिष के उत्तराधिकारी हों।

आईये वह रोशनी जो क्रूस से निकल रही है, आपको प्रचुरता से भर दे और आपकी उदासी को निकाल दे। इस आशा की तरह कोई आशा नहीं है जो एक पश्चाताप करने वाले पापी के हृदय को भर देता, जब वह उद्धारकर्त्ता के उन भागों को देखता है जिन से लहू बह रहा है और उन फैली हुई बांहों को देखता है। आपका अंधकार रोशनी में, आपका भारीपन गीतों में बदल जायेगा। प्रभु यीशु हमारे लिए आशा लाये हैं, जो केवल दिन के बढ़ने के साथ बढ़ता जाता है।

- जोशुआ दानिय्येल

***

For More Details Please contact on any of the following Addresses.

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532-2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-66334763/ 25008840
NOIDA(Delhi): Beautiful Books, Basement, Sharma Market, Atta, Sector-27, NOIDA, Uttar Pradesh Ph.09810776324.
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

पृष्ठ 1 से...मैंने यहोवा को...

अन्तरात्मा पर छा जाए और अपना पूरा अस्तित्व उनकी इच्छा से भरा रहे तो अपकी जिन्दगी कामयाब होगी। यह इच्छा भी परमेश्वर की देन है। जवानी एक ऐसी अवस्था है जब शरीर की लालसायें, आध्यात्मिक इच्छाओं को नीचे गिराने कि कोशिश करती रहती हैं। असली लड़ाई का यही समय है। अगर परमेश्वर आपकी तरफ हैं तो आप जरूर जीतोगे। परमेश्वर आपकी मीरास होंगे। दिव्य स्वभाव आपकी मीरास होगा। क्रूस पर अपना प्राण त्यागने वाला - उनका स्वभाव, वहीं स्वभाव है जो इस दुनिया को जीत सकता है। ऐसा स्वभाव जिसमें होगा - वो ही इस संसार पर विजय पायेंगे। ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर के विचारों से और उनके स्वभाव से भर पूर है, कभी ना डगमगाएगा। परमेश्वर उनकी मीरास का भाग होंगे।

पाँचवा वचन - 'यहोवा मेरी मीरास का भाग और मेरा प्याला है; तू मेरे भाग को सम्भालता है।' दाऊद कहते हैं कि वह परमेश्वर और उनके स्वभाव को वह पीता है। परमेश्वर आप की मीरास और वहीं अपके भाग को सम्भालेंगे। दाऊद इन गहरे विचारों में बहुत ऊँचे उठते है।

छठा वचन - 'मेरे लिए माप की डोरी सुहावने स्थानों पर ही पड़ी; मेरी मीरास वास्तव में मनभावनी है।' उनकी मीरास का स्थान जो परमेश्वर उनके लिए मापा था, भला स्थान था।

जहाँ भी आप चलो, वहाँ आप विजयी होंगे। परमेश्वर ने मुझे जवानी में ऐसी ही विजय दी थी। जिस कॉलेज में भी मैं जाता, वहाँ मैं उनको 'अधिपति' प्रस्तुत करता। और कई नव जवान उनकी तरफ आकर्षित हुए थे। आपको भी इसी तरह विजय हासिल करनी है। नवजवानों, आप कभी ना डगमगाओंगे। आप कभी ना हारोगे। आपका विश्वास आदर प्राप्त करेगा। परमेश्वर की निगाहों में शुद्ध और पवित्र बने रहो। जकर्याह 12:8, 9 - उस दिन यहोवा यरूशलेम के निवासियों की रक्षा करेगा, और जो निर्बल है वह दाऊद के समान बनेगा तथा दाऊद का घराना उनके लिए परमेश्वर के समान , हाँ परमेश्वर के दूत के समान होगा जो उनके आगे चलता हो। और उस दिन ऐसा होगा कि यरूशलेम के विरुद्ध जितनी जातियाँ उठेंगी उस सब को मैं ढूंढ कर नाश करूंगा। आपके प्रति परमेश्वर के लक्ष्य महान है। दाऊद, परमेश्वर को अपने आनन्द की भरपूरी में अगुवाई करते देख पाया। 'मेरी देह भी चैन से रहेगी।' आध्यात्मिक अभिलाषाओं का विरोधी शरीर है। शरीर आत्मा पर प्रभाव डालकर, आत्मा को स्वार्थ से कलुषित कर देता है। नैतिक दृष्टि से, जीवन का आशय - सिद्ध जीवन पाना और दूसरों को खुश करना है। त्याग से सिद्धता प्राप्त होती है। क्रूस के सामने अपने आप को दीन करना और अध्यात्मिक अनुशासन, हमें सिद्ध बनाता है। दूसरों से सुसमाचार बाँटना ही सच्ची खुशियाँ बाँटना है।

ग्यारहवा वचन - 'तू मुझे जीवन का मार्ग दिखाएगा, तेरी उपस्थिति में आनन्द की भरपूरी है; तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है।' आपकी आस्था भी यही बने। जब हम आयु में आगे बढ़ते है तो हम अपनी सफलता का अनुमान लगाते है। अगर आप अपनी जवानी में, परमेश्वर को अपने दाहिने ओर न रखकर रहें है, अपनी मीरास का भाग उन्हें नहीं चुना तो हमारी जिन्दगी कभी सफल नही रहेगी। सर्वश्रेष्ठ भाग देना ही परमेश्वर का उदेश्य है। उनका धीरज और सहनशीलता अद्भुत है। हम उनके लक्ष्य को अपने स्वार्थ से भंग करते है। यह कितनी अद्भुत बात है कि हमारे स्वार्थ और आज्ञा उल्लंघन के बावजूद परमेश्वर कहते है, 'आओं हम आपस में विचार-विमर्श करें।' जो कुछ भी उनके हाथों में सौंपते है उसी में से वे हमारे लिए उत्तम देना चाहते है। और हमारे प्रति सहनशील हैं। परमेश्वर के वचन को नापढ़कर हम अपनी जिन्दगी को बरबाद करते है। मरकुस 12:24 - 'क्या तुम इस कारण भूल में नही पड़े हो कि तुम न तो पवित्रशास्त्र को समझते हो और ना ही परमेश्वर के सामर्थ्य को?' कुछ समय लोग, बुढ़ापे में अपने आप को, वे परमेश्वर को सौंपते देते है। हमारी जवानी में परमेश्वर हमें चाहते है। उनकी आज्ञा ना मानकर, उनकी योजनाओं को भंग करने के लिए मैं परमेश्वर से कई दफ़ा माफ़ी माँगता हूँ। चाहे हम मन फिराये हों, फिर भी कई बार हम उनको दु:ख देते है और, उनके लक्ष्यों को भ्रष्ट कर देते है। काश मैं अपनी कॉलेज के दिनों उनकी अज्ञाओं का और अधिक पालन करता। एक दिन एक दोस्त को तार आया था कि उनकी भतीजी गुजर गयी। लोग उनकी दिलासा देने के लिए प्रार्थना कर रहे थे। परमेश्वर ने मुझ से कहा कि मैं उसके जीवित होने के लिए प्रार्थना करूँ। लोग मेरी हँसी न उड़ाए यह सोच कर मैं ऐसी प्रार्थना नहीं करना चाहता था। वस्तव में वह जीवित थी। तार में दिये गये शब्दों की अदली-बदली हो गयी थी। मैं परमेश्वर के नाम की महिमा नही कर पाया क्यों कि मुझे अपने नाम की ज्यादा चिन्ता थी। परमेश्वर में एक सिद्ध व्यक्ति बनो! परमेश्वर आप को बुला रहे है।

उनके दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है। तेरी मीरास का भाग, परमेश्वर है।

स्वर्गीय एन. दानिय्येल।

नीतिवचन 3:(5-10)

तू सम्पर्ण हृदय से यहोवा पर भरोसा रखना, और अपनी समझ का सहारा न लेना। उसी को स्मरण करके अपने सब कार्य करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा। अपनी दृष्टि में तू बुद्धिमान न बनना। यहोवा का भय मानना, और बुराई से विमुख रहना। इस से तेरा शरीर स्वस्थ रहेगा तथा तेरी हड्डियों को पुष्टता प्राप्त होगी। अपनी सारी उपज के प्रथम फल से तथा अपनी सम्पत्ति के द्वारा यहोवा का आदर करना। तब तेरे भण्डार बहुतायत से भरे रहेंगे, और तेरे कुण्ड नए दाखरस से उमंड़ते रहेंगे। '

सत्य की परख!

वह खरे लोगों के लिए खरी बुद्धि का भण्डार रखता है। जो सच्चाई से चलते है, उनके लिए वह ढाल है।' (नीतिवचन 2:7)

क्षमाशीलता – चंगाई की सम्पूर्ण औषधि

कल्पना करें, इस दृश्य की, हाल नामक कोर्ट के कक्ष में मुकदमा चल रहा है। यह स्थान दक्षिणी अफ्रिका में है। एक कमजोर बुजुर्ग निग्रो महिला धीमे से अपने पैरों पर खड़ी हुई। वह करीब सत्तर वर्ष की थी। वह उस कमरे में कई गोरे सुरक्षा पुलिस अफसरों के सामने खड़े थी। मि. वान डर ब्रोयेक के मुकदमे की सुनवाई हो रही थी जिसमें कुछ वर्षों पहले इनके पति और पुत्र की हत्या हुई थी। यह बात साबित हो चुकी थी कि यह वान डर ब्रोयेक ही थे जो कई वर्षों पहले इस महिला के घर आये थे। पहले उनके पुत्र को ले गये और बंदूक के निशाने पर उसे गोली मार दी और उसके बाद उस जवान का शरीर आग में जला डाला। शव जलाते समय यह और उसका अफसर नजदीक बैठ कर भोजन का मज़ा उठा रहे थे।

कुछ वर्षों बाद, वान डर ब्रोयेक और सहयोगी उनके पति को भी ले गये। कई महीनों तक उनके बारे में कुछ पता नहीं चला। अपने पति के गायब होने के करीब दो वर्षों बाद ब्रोयेक इस महिला को ले जाने के लिए आये। उस शाम की उन्हें अच्छी तरह याद थी। नदी के किनारे एक जगह पर उनके पति को दिखलाया गया, जहाँ वह बँधे थे और उन्हें बुरी तरह पीटा गया था, किन्तु अभी भी वे आत्मा में मजबूत थे। उन्हें लकड़ी के ढेर पर लिटाया हुआ था, पैट्रोल डालकर उन्हेंआग लगा दी गई। उस जलती आग से उनकी आवाज सुनाई दी, 'हे पिता इन्हें क्षमा कर।'

और अब यह महिला अदालत के कमरे में खड़ी थी। और मि. वान डर ब्रोयेक अपना अपराध कबूल कर रहे थे और सभी सुन रहे थे। दक्षिण आफ्रिका के सत्य और मेल मिलाप आयोग के एक सदस्य ने उनकी ओर मुड़कर पूछा, 'अब आप क्या चाहती हैं? इस व्यक्ति के साथ कैसा न्याय किया जाये, जिसने आपके परिवार को इतनी निर्दयता से बर्बाद किया था?'

वृद्ध महिला ने शांति से वरन् पूरे विश्वास से आरम्भ किया, 'मैं तीन चीजें चाहती हूँ', 'पहला, मैं चाहती हूँ कि मुझे उस जगह ले जाया जाये जहाँ मेरे पति को जलाया गया था ताकि मैं वहाँ से उनके शरीर की राख को जमा कर सकूँ और उनके अवशेषों को आदर सहित दफन कर सकूँ।'

वे थोड़ा रुकीं, तब अपनी बात जारी रखते बोलीं, 'मेरे पति और पुत्र ही मेरा परिवार था। दूसरी जो बात मैं चाहती हूँ ,कि मि. वान डर ब्रोयेक मेरे पुत्र बनें। और महीने में दो बार मेरे घर आयें और एक पूरा दिन मेरे साथ बितायें जिससे मैं उस पर अपना प्यार उंडेल सकूँ, जो मेरे अन्दर अभी भी बाकी है।'

'और अंत में' उसने कहा, 'मैं एक तीसरी चीज चाहती हूँ कि मि. वान डर ब्रोयेक यह जाने कि मैंने उन्हें क्षमा किया है। क्योंकि यीशु मसीह क्षमा करने के लिये मरे। मेरे पति की भी यही इच्छा थी। इसलिये मैं किसी से आग्रह करती हूँ कि कृपया वह मेरे पास आये और मुझे अदालत के कमरे की दूसरी ओर ले जाये जिससे मैं वान डर को अपनी बाँहों में ले लूँ, उसे गले लगाऊँ और उसे यह महसूस होने दूँ कि मैंने सचमुच उसे क्षमा कर दिया है।'

अदालत का एक सहायक आकर वृद्ध महिला को कमरे के दूसरी तरफ ले गया, मि. वान डर ब्रोयेक ने जो सुना उससे अभिभूत हो गये, और बेहोश हो गये। और जैसा उसने किया, जो अदालत के कमरे में थे, मित्र, परिवार, पड़ोसी-उस सदी के सभी उत्पीड़ित व्यक्ति और अन्याय से ग्रसित व्यक्ति -गाना शुरू किया-मधुर स्वर में परन्तु विश्वास से, 'आश्चर्यजनक कृपा वह कैसी मधुर वाणी उसने मुझ जैसे अभागे को बचा लिया।'

स्वर्ग – परमेश्वर की उपस्थिति का स्थान

एक बार, मैंने एक बीमार लड़की के बारे में सुना था। उसकी माँ भी बहुत बीमार थी। माँ को थोड़ा आराम मिले, उस कारण छोटी बच्ची को उनके दोस्त जो एक अच्छी महिला थी, उनके यहाँ ले जाया गया, ताकि वह अपनी माँ को परेशान न करे। माँ की हालत और बिगड़ गयी और वह चल बसी। तब पिता ने कहा, 'इस बात को ले कर इस नन्ही सी जान को क्यों तकलीफ दे। वह इतनी छोटी है कि उसे अपनी माँ याद भी न होगी। अंत्येष्टि होने तक वह जहाँ है वहीं पर रहने दे।'

वैसा ही किया गया। और कुछ दिनों बाद छोटी बच्ची को घर वापस लाया गया। माँ के बारे में किसी ने भी जिक्र नही किया कि क्या हुआ था। मगर घर में लाते ही, वह एक कमरे में दौडती गयी। फिर दूसरे, तीसरे और सारा घर छान मारा। और उस छोटे से कमरा में भी जहाँ उसकी माँ प्रार्थना किया करती थी।

'माँ किधर है?' वह रोने लगी। 'मुझे, माँ चाहिए!' और जब अखिर में जो हुआ था उन्हें बताना ही पड़ा। तब वह रो उठी, 'मुझे यहाँ से ले जाओ, मुझे यहाँ से ले जाओ', माँ के बिना मुझे यहाँ नहीं रहना है।'

वह माँ थी, जिसने उस मकान को एक घर बनाया। स्वर्ग में भी वैसा ही है। वहाँ श्वेत वस्त्र, सोने का मुकुट या वीणा, यहीं सब चीजे महत्वपूर्ण नही। बल्कि वह समूह जिस से हम मिलने जा रहे है। वहाँ, और फिर कौन है? जब हम वहाँ पहुँचे हमारी संगति किस के साथ रहेगी? यीशु वहाँ होंगे। पवित्र परम पिता वहाँ होंगे और पवित्र आत्मा भी - हमारा पिता, हमारा जेष्ठ भाई और सान्त्वना देने वाला सहायक।

अब्राहम लिंकन के शब्द

यह देश और वहाँ के निवासियों का कर्तव्य है कि वे परमेश्वर की सर्व-सामर्थ पर अपनी निर्भरता को अंगीकार करें। और पवित्र बाइबल में घोषित अमिट सत्य को पहचानें , जैसा सारे इतिहास न साबित किया कि वह देश ही धन्य और आशिषित हैं जिनका प्रभु यहोवा है।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।